E-ISSN: 2582-9769

धान के प्रमुख कीट एवं उनका नियंत्रण

[1] चंद्रकान्ता जाखड़, [2] राज कुमार जाखड, [3] बसंत कुमार दादरवाल एवं [4] योगेंद्र मीणा
[1] स्नाकोत्तर छात्रा, शस्य विज्ञान विभाग, श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर
[2,3,4] विद्यावाचस्पति छात्र, उद्यान विज्ञान विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

धान की फसल को कुछ क्षतिकर कीट जैसे तना छेदक, गुलाबी तना छेदक, पत्ती लपेटक धान का फुदका और गधीबग काफी नुकसान पहुंचाते है।

तना छेदक

यह कीट पौधे पर अपने लार्वा को जन्म देते हैं जो पौधे के तने में छेद कर उसे अंदर से खोखला कर देता है। जिससे पौधे की पोषक तत्व मिलने बंद हो जाते हैं इस कारण पोधों का विकास रुक जाता है और तने के खोखले हो जाने की वजह से पौधे जल्द ही टूटकर गिरने लगते हैं।

रोकथाम

- गर्मियों में खेतों की गहरी जुताई करनी चाहिए।
- खड़ी फसल में रोग दिखाई देने पर पौधों पर क्लोरपाइरीफॉस 20 प्रतिशत ईसी या क्यूनालफॉस 25 प्रतिशत ईसी की 1ण्5 लीटर मात्रा को 500 लीटर पानी में मिलाकर छिड़कना चाहिए।
- कार्बोफ्यूरान 33.3 किलो प्रति हेक्टेयर या मोनोक्रोटोफॉस 625 मिली या 1.5-2.0 लीटर ट्रायजोफॉस दवा का 500–1000 लीटर पानी में छिड़काव भी फसल में लाभ पहुंचाता है।

पत्ती लपेटक

इस कीट की सुंडी पौधे की पत्तियों को लपेटकर सुरंग बना लेती है और उसके अंदर रहकर पत्तियों का रस चूसती है जिससे पौधे की पत्तियों का रंग पीला दिखाई देने लगता है। कीट के अधिक बढ़ने से पत्तिया जाली के रूप में दिखाई देने लगती हैं।

रोकथाम

- पौधों की समय से रोपाई कर उसमें खरपतवार पैदा ना होने दें।
- इस रोग की रोकथाम के लिए पौधों पर कार्बोफ्यूरान 3 जी की 33.3 किलो मात्रा या कारटाप हाइड्रोक्लोराइड 4 जी की 18 से 20 किलो मात्रा को 500 से 700 लीटर पानी में मिलकर छिडकना चाहिए।
- इनके अलावा क्लोरपाइरीफॉस, क्यूनालफॉस, ट्राएजोफॉस या मोनोक्रोटोफॉस का छिड़काव भी रोग की रोकथाम के लिए अच्छा होता है।

हिस्पा

इस कीट की बीटल पौधे की पत्तियों के अर्दध चर्म को खा जाते हैं जिससे पौधे की पत्तियों पर सफेद रंग के धब्बे दिखाई देने लगते है। इसका प्रकोप बढ़ने पर पौधों की वृद्धि रुक जाती है।

रोकथाम

- इसकी रोकथाम के लिए धान की रोपाई समय पर करनी चाहिए।
- खड़ी फसल में प्रकोप दिखाई देने पर कारटाप हाइड्रोक्लोराइड 4 जी की 18 से 20 किलो मात्रा या कार्बोफ्यूरान 3 जी की 33.3 किलो मात्रा को 500 से 700 लीटर पानी में मिलकर पौधों पर छिडकना चाहिए।
- इसके अलावा 1.5-2.0 लीटर ट्राएजोफॉस या 625 मिली मोनोक्रोटोफॉस, 1250 मिली क्लोरपाइरीफॉस या 1 लीटर क्यूनालफॉस का 500 से 700 लीटर पानी छिडकाव भी लाभप्रद होता है।
-

धान का फुदका

धान का फुदका फसल के तैयार होने के वक्त देखने को मिलता है। धान की फसल में हरा, भूरा और सफेद तीन तरह के फुदके नुकसान पहुंचाते हैं जिन्हें एक समान रूप से उपचारित किया जाता है। शुरूआती अवस्था में इसके कीटों का रंग हरा दिखाई देता है जो बाद में कीट के व्यस्त होने के साथ साथ बदलता है। इस रोग के कीट पौधे की पत्तियों का रस चूसकर और उन्हें खाकर पौधों को नुकसान पहुँचाते हैं। कीट बढ़ने पर पौधे विकास करना बंद कर देते हैं तथा अधिक प्रकोप होने पर फसल जली हुयी प्रतीत होती है।

रोकथाम

- गर्मियों में खेतों की गहरी जुताई करनी चाहिए।
- फेरोमोन ट्रैप 5 ट्रैप प्रति हे० की दर से प्रयोग करें।
- इमिडाक्लोप्रिड 17ण्8 प्रतिशत एस एल 125 मिली, थायामेथोक्सम 25 प्रतिशत डब्ल्यू जी 100 ग्राम, क्लोरपाइरीफास 20 प्रतिशत ईसी 1.50 लीटर, क्यूनालफास 25 प्रतिशत ईसी 1.50 लीटर या एजाडिरेक्टिन 0.15 प्रतिशत ईसी 2.50 लीटर को प्रति हेक्टेयर की दर से 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये।

गन्धी बग

यह व्यस्क लम्बा हल्के व हरे भूरे रंग का कीट होता है। इस कीट की पहचान कीट से आने वाली अजीब सी गंध से भी कर सकते हैं। इसके व्यस्क एवं शिशु दूधिया दानों को चूसकर हानि पहुचाते है जिससे दानों पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं तथा दाने खोखले रह जाते हैं।

रोकथाम

- गर्मियों में खेतों की गहरी जुताई करनी चाहिए।
- एजाडिरेक्टिन 0.15 प्रतिशत ईसी की 2.50 लीटर मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना लाभप्रद होता है।
- फेनवैलरेट 0.04 प्रतिशत धूल 20.25 कि०ग्रा० प्रति हेक्टेयर की दर से बुरकाव करना चाहिये।